छुटकी उल्ली!

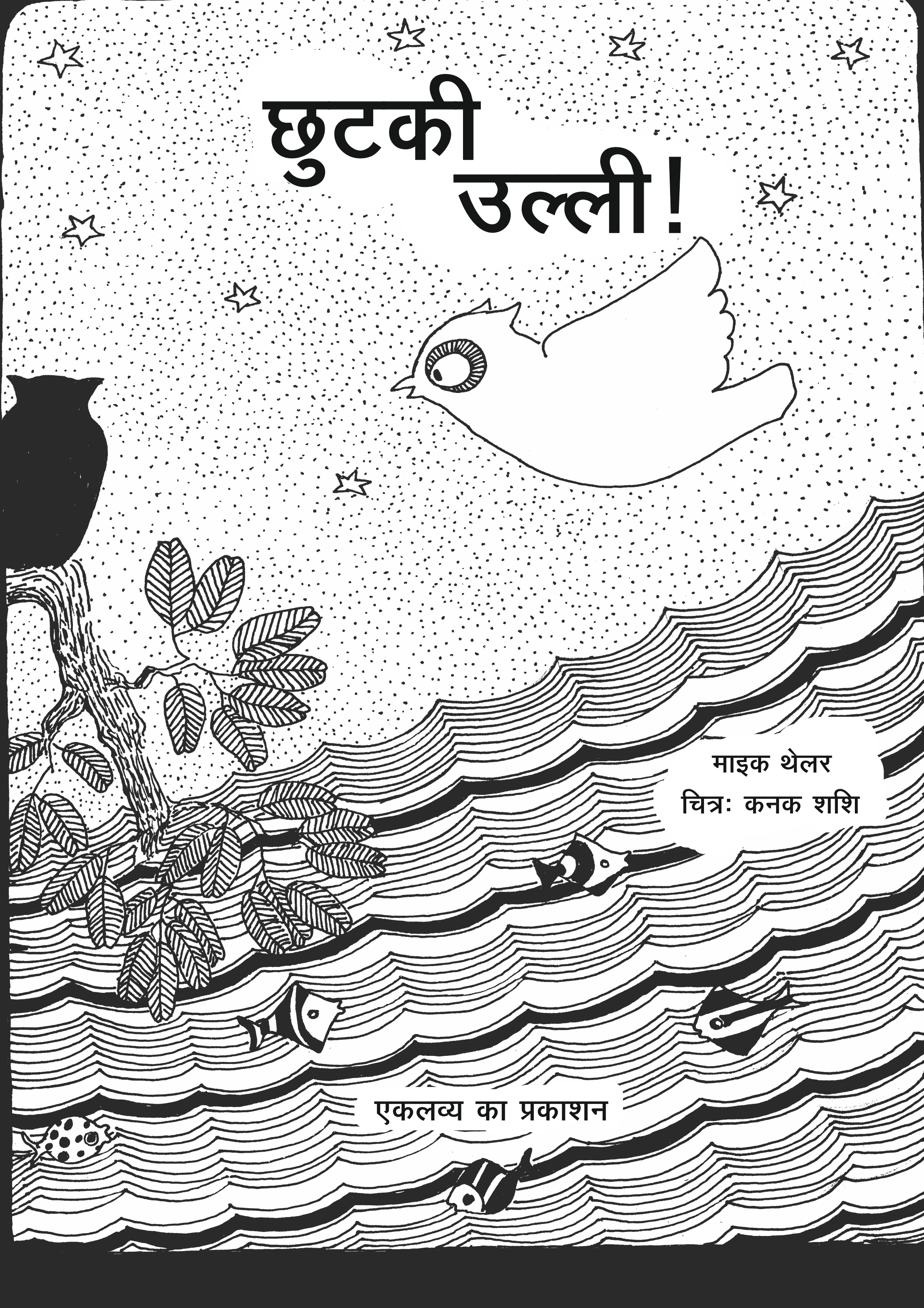

माइक थेलर
चित्र: कनक शशि

एकलव्य का प्रकाशन

छुटकी उल्ली!

माइक थेलर

अंग्रेज़ी से अनुवादः तेजी ग्रोवर

चित्रः कनक शशि

एकलव्य का प्रकाशन

छुटकी उल्ली!

एक चित्रकथा

कहानीः माइक थेलर
अँग्रेज़ी से अनुवादः तेजी ग्रोवर
चित्रः कनक शशि

सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
पहला संस्करणः जनवरी 2006 / 5000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः मार्च 2008 / 5500 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रणः मार्च 2010 / 5000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रणः अप्रैल 2011 / 5000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रणः जनवरी 2012 / 10,000 प्रतियाँ
पाचवाँ पुनर्मुद्रणः जनवरी 2016 / 3000 प्रतियाँ
छठवाँ पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2016 / 5000 प्रतियाँ
सातवाँ पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2017 / 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 210 gsm पेपर बोर्ड
ISBN: 978-81-87171-66-9
मूल्यः ₹ 20.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल फोनः +91 755 2 687 589

जब छुटकी उल्ली दो साल की हुई, तो उसने सवाल पूछना शुरू किया।

“आसमान में कितने सितारे हैं?” एक रात उसने अम्मी से पूछा।

“बहुत से,” अम्मी ने जवाब दिया।

“कितने?” छुटकी उल्ली ने आसमान की ओर देखते हुए पूछा।

अम्मी मुस्कराने लगी, “तुम गिनकर देख लो।”

“एक, दो, तीन, चार…”

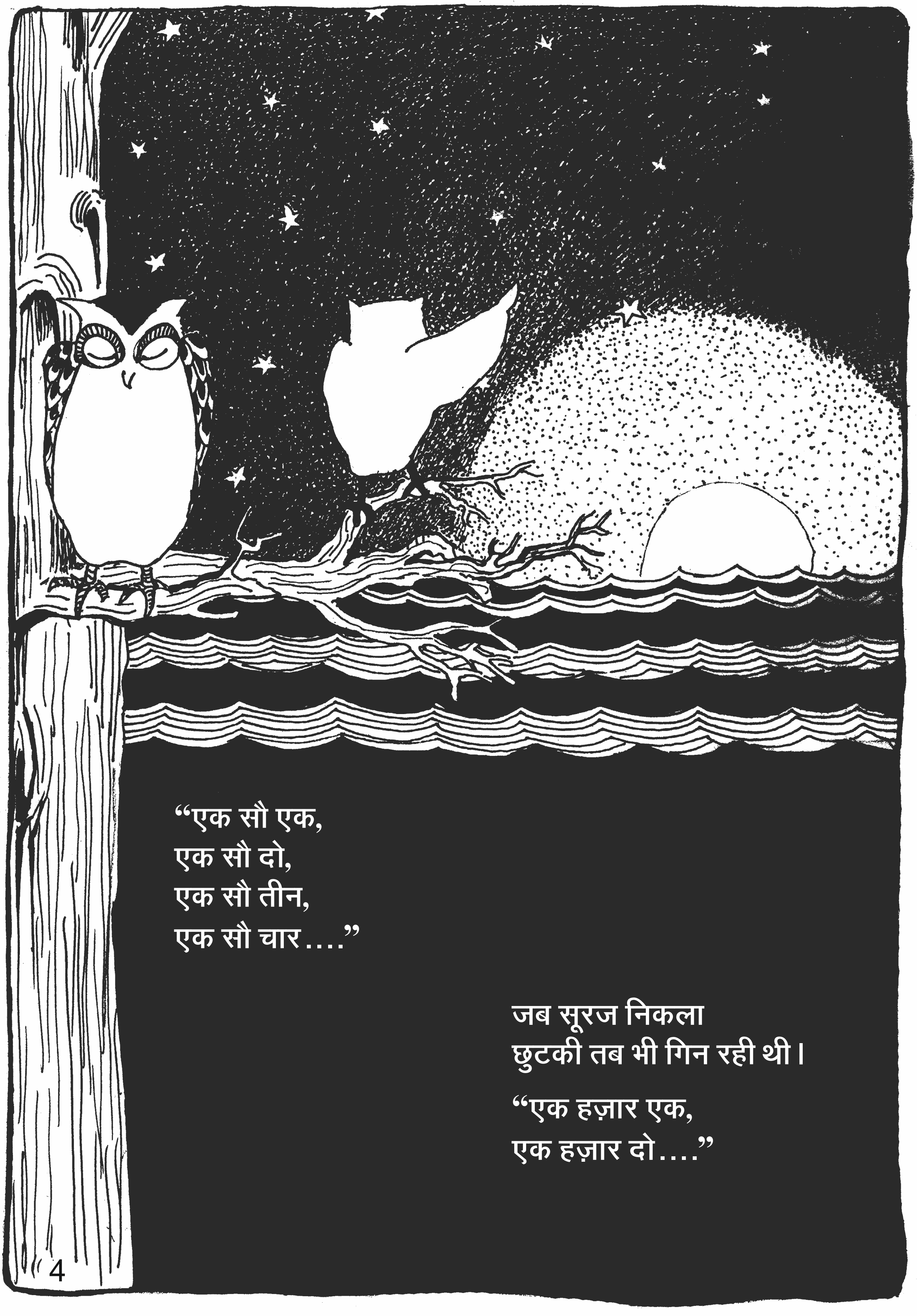

“एक सौ एक,
एक सौ दो,
एक सौ तीन,
एक सौ चार....”

जब सूरज निकला
छुटकी तब भी गिन रही थी।

“एक हज़ार एक,
एक हज़ार दो....”

“कितने सितारे हैं आसमान में?” अम्मी ने पूछा।

“इतने कि मैं गिन भी नहीं सकती,” छुटकी ने पलकें झपकाते हुए कहा। फिर अपना सिर अपने पंखों में छिपाकर झट-से सो गई।

अगली रात छुटकी ने फिर आसमान की ओर देखा।

"अम्मी, आसमान ऊँचा कित्ता है?"

"बहु ऽऽऽ त ऊँचा," अम्मी बोली।

"कितना ऊँचा?" छुटकी उल्ली ने फिर पूछा।

"जाकर खुद ही देख लो," अम्मी ने कहा।

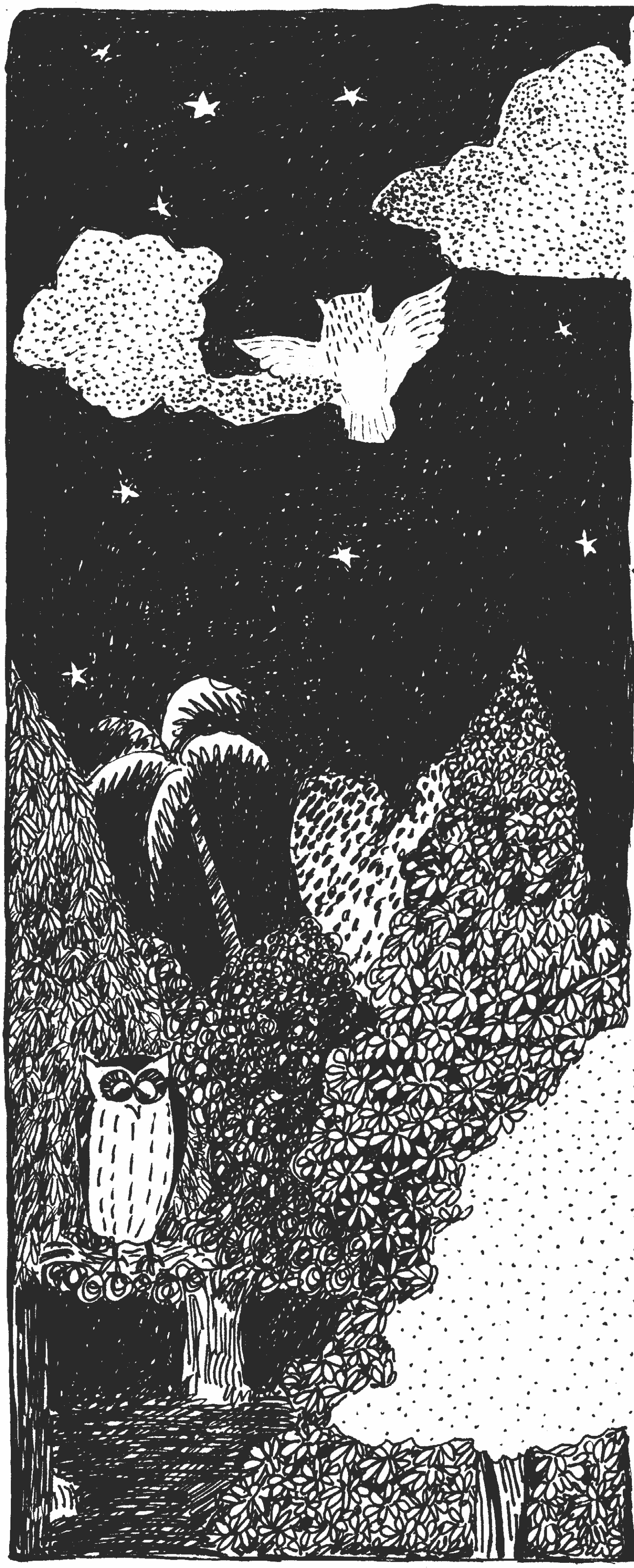

तो छुटकी ऊपर आसमान की ओर उड़ चली। अपने पेड़ से बहुत ऊपर। बादलों तक जा पहुँची।

उसने अपने पंख ज़ोर से फड़फड़ाए। अब वह बादलों से भी ऊपर उड़ रही थी।

लेकिन वह जितना ऊपर जाती आसमान और ऊपर उठता चला जाता।

सुबह जब वह अपने पेड़ पर उतरी तो बहुत थक चुकी थी।

"तो कितना ऊँचा है आसमान?" अम्मी ने पूछा।

"इतना ऊँचा कि मैं उड़कर वहाँ पहुँच ही नहीं सकती," उल्ली ने जवाब दिया।

फिर उसने अपनी आँखें बन्द कीं और सो गई।

अगली रात छुटकी ने
समुद्र में लहरों की आवाज़ सुनी।

"समुद्र में कितनी लहरें हैं?" उसने अम्मी से पूछा।

"बहुत-सी," अम्मी बोली।

"कितनी?"

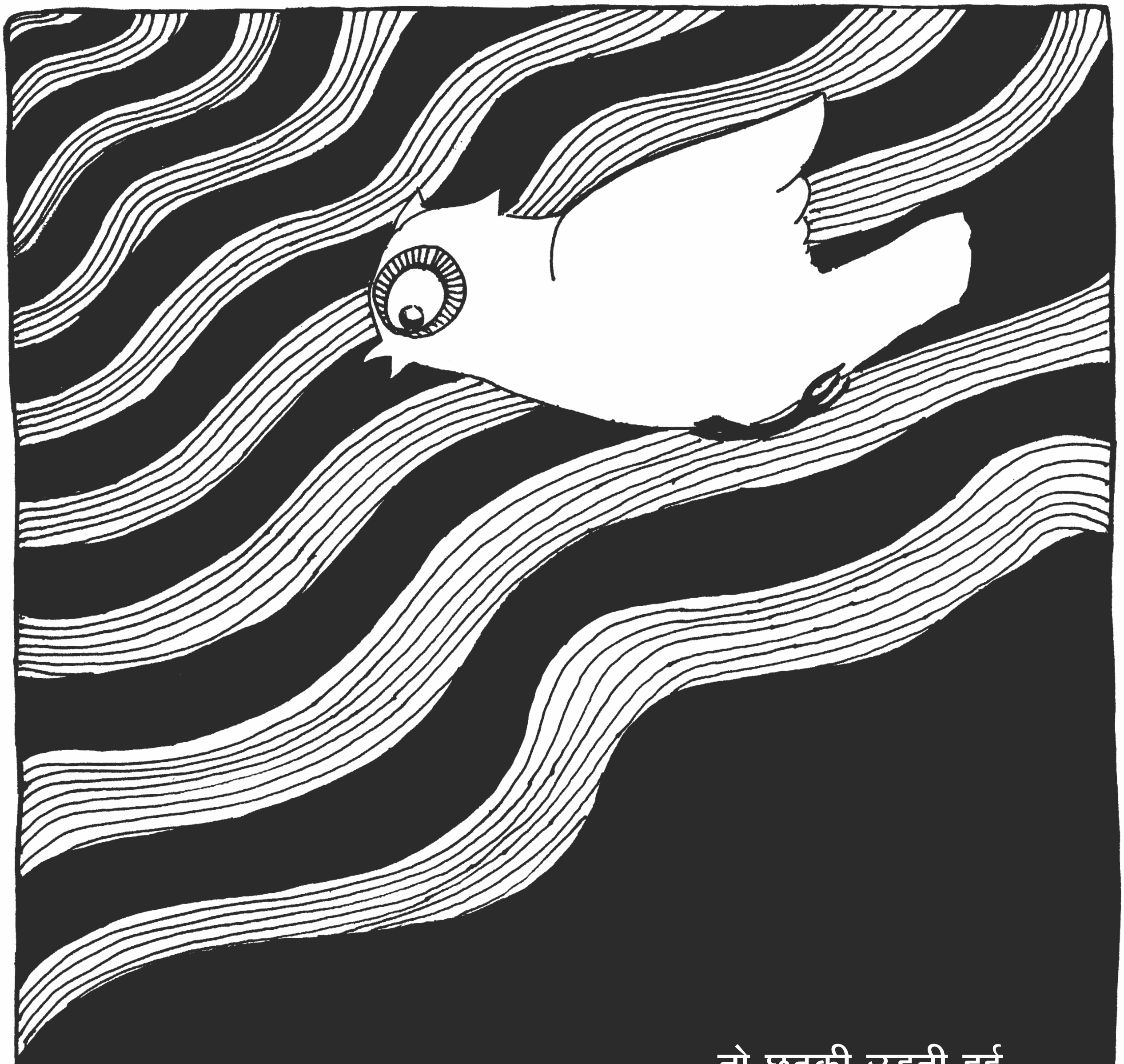

तो छुटकी उड़ती हुई
समुद्र के किनारे आ पहुँची और लहरें गिनने लगी।

“एक, दो, तीन, चार.....”

पर वह जितनी लहरें गिनती,
और-और लहरें किनारे से टकराने लगतीं।

“एक हज़ार एक, एक हज़ार दो....”

और जब सूरज निकला,
उसने देखा कि समुद्र अब भी लहरों से भरा हुआ था।

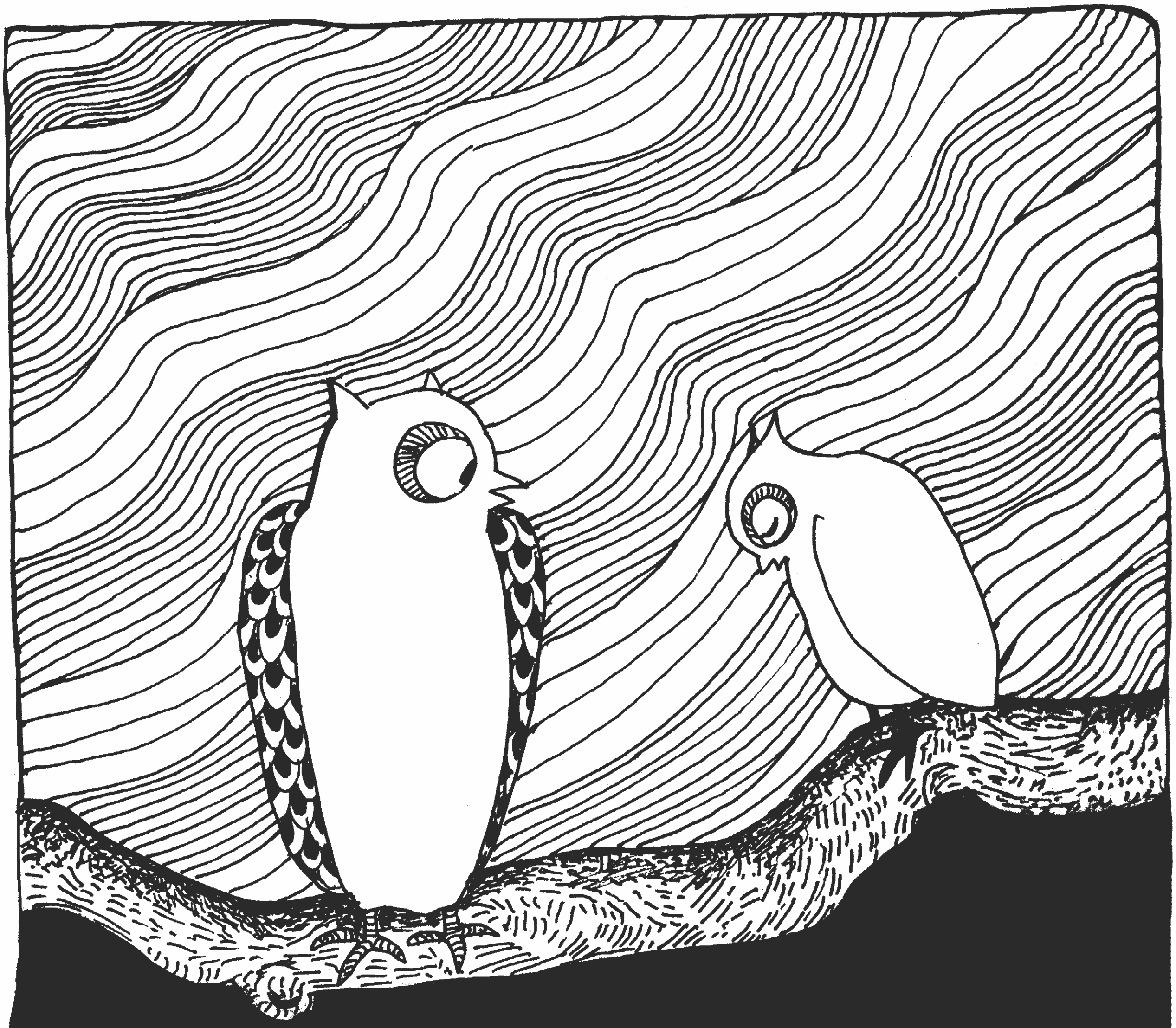

उसे ज़ोरों की नींद आ रही थी। वह अम्मी के पास लौट आई।

“तो कितनी लहरें हैं समुद्र में?” अम्मी ने पूछा।

“इतनी सारी कि मैं गिन ही नहीं सकती,” छुटकी आँखें मींचते हुए बोली।

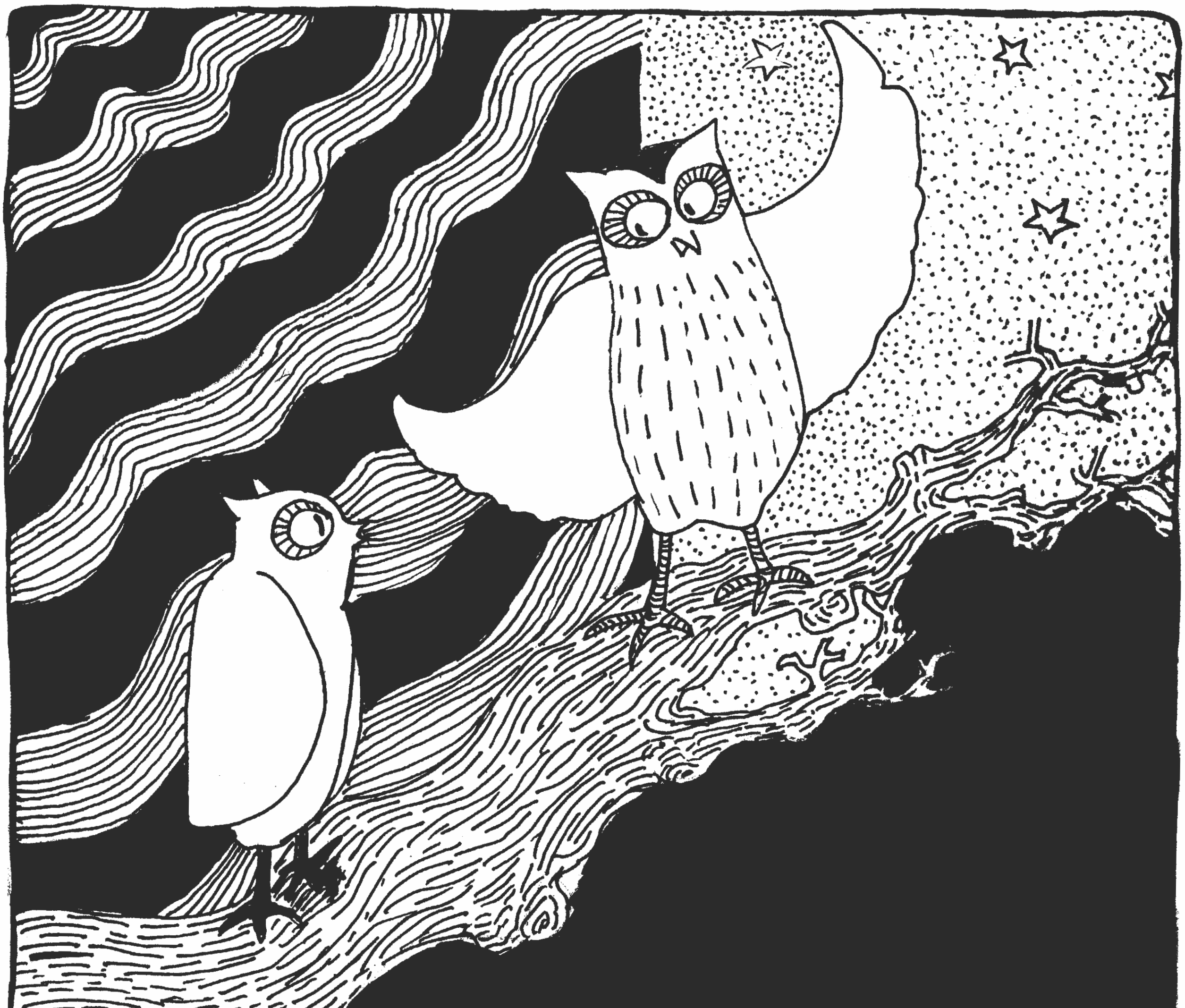

अगली रात
छुटकी ने अम्मी से पूछा,
"समुद्र कितना गहरा है?"
"बहुत गहरा।"
"कितना गहरा?"
अम्मी आसमान की ओर देखते हुए बोली,
"लगभग उतना ही गहरा जितना ऊँचा आसमान है।"

छुटकी सारी रात आसमान और सितारों के बारे में सोचती रही, समुद्र और लहरों के बारे में सोचती रही। जो भी उसने अम्मी से सीखा था, उसके बारे में सोचती रही।

सूरज निकलते ही छुटकी अम्मी की ओर मुड़ी,
"मैं तुमसे प्यार करती हूँ, अम्मी।"

"कितना?" अम्मी ने पूछा।

"बहुत!"

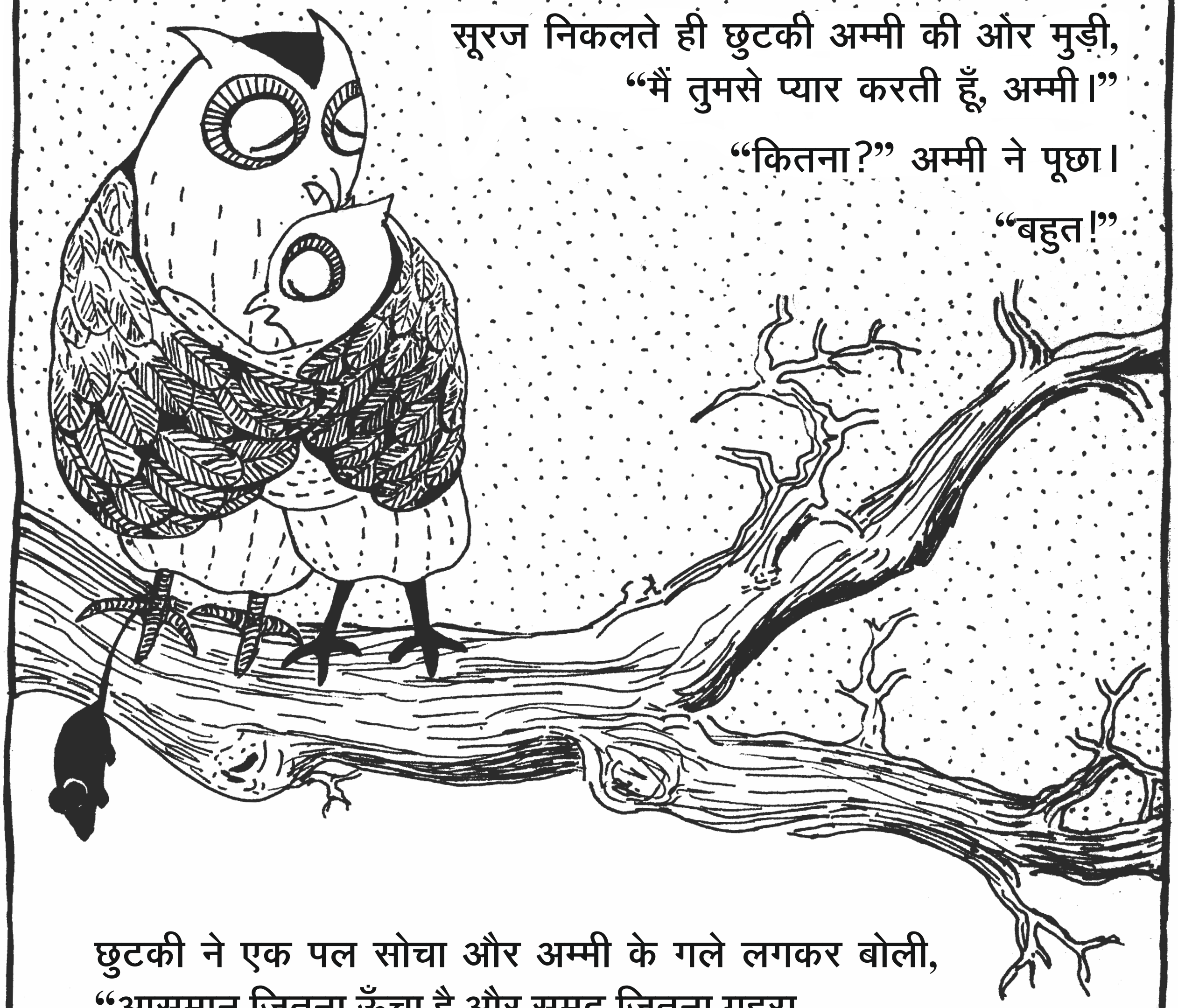

छुटकी ने एक पल सोचा और अम्मी के गले लगकर बोली,
"आसमान जितना ऊँचा है और समुद्र जितना गहरा,
मैं तुमसे उतना प्यार करती हूँ।"

अम्मी ने अपने पंखों से छुटकी को ढाँप लिया।

"तुम कितनी बार गले लगाओगी मुझे?" उल्ली ने पूछा।

"बहुत बार!" अम्मी ने उसे फिर गले से लगा लिया।

"कितनी बार?"

"जितनी लहरें हैं समुद्र में, जितने तारे हैं आसमान में...।"

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, तामिया, हरदा, देवास व शाहपुर (बैतूल) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्कः books@eklavya.in
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 016 (मप्र)

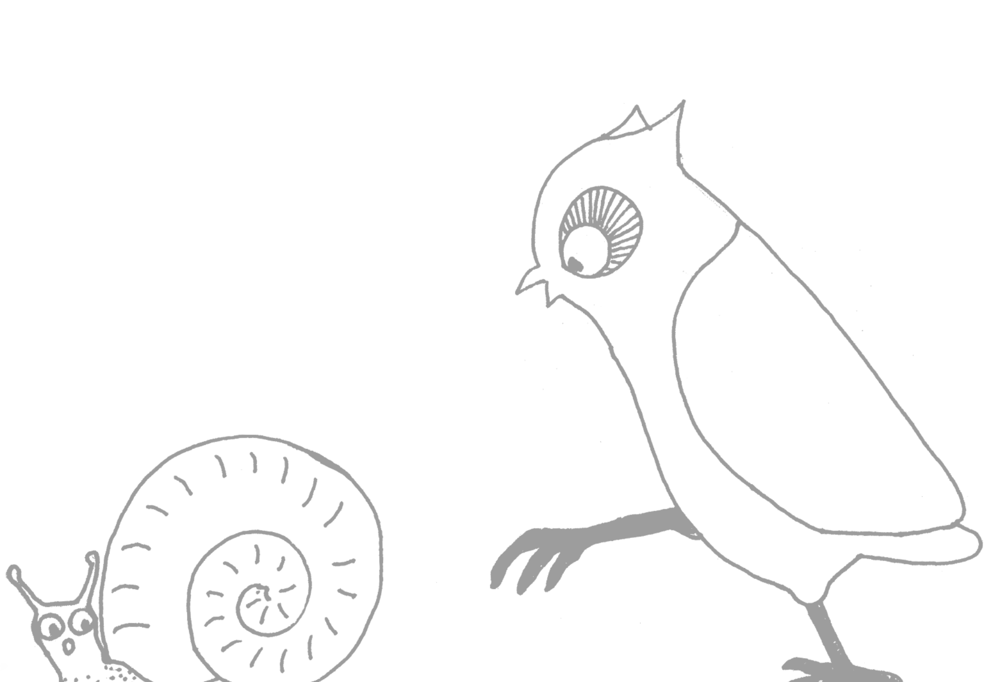

चित्रकथाओं के पक्ष में...

3 से 7 साल की उम्र के बच्चों की सबसे अच्छी कहानियाँ वे होती हैं जिनमें कुछ सीमित संदर्भों के इर्द-गिर्द कहानी बुनी गई हो। और इन्हीं बच्चों के लिए तैयार चित्र-कथाएँ ऐसी हों जिनमें नई-नई परिस्थितियों और सवालों को टटोलते हुए कुछ गिने-चुने पात्र हों। कुछ बातें कहानी में दोहराई जाएँ जबकि कुछ नएपन के साथ आगे खुलती चली जाएँ। लिखित भाषा कम-से-कम हो, परिचित हो। चित्रों की भरमार तो हो ही, उनकी बारीकी पर भी ध्यान दिया गया हो ताकि वे कहानी को समृद्ध बनाएँ और पढ़ने वाले बच्चों की नज़रों और मन के रुकने के लिए ठौर भी उपलब्ध कराएँ। नया-नया पढ़ना सीखे बच्चों की बढ़िया दोस्त हैं चित्रकथाएँ!

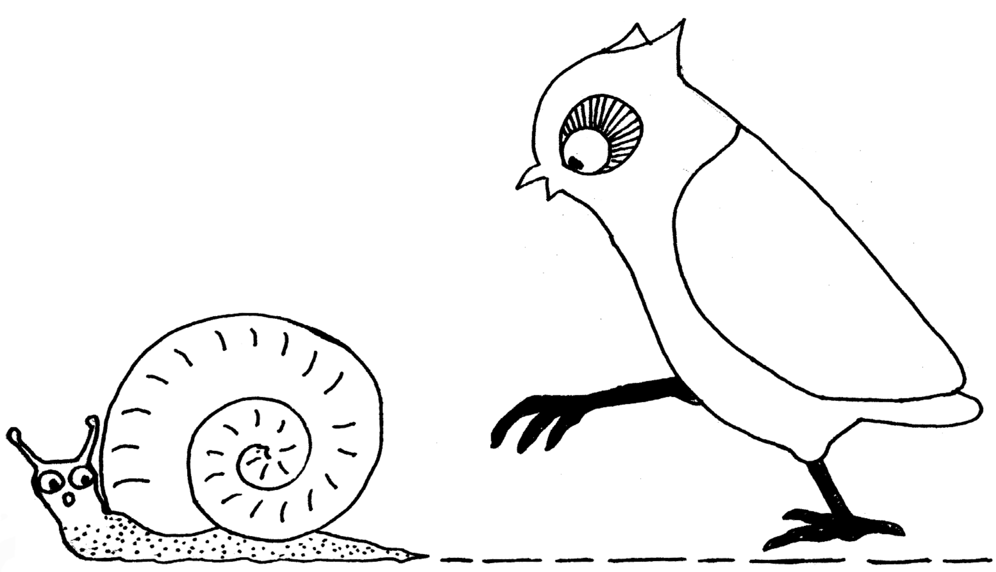

9 788187 171669

एकलव्य

मूल्य: ₹ 20.00